जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 27 संख्याः 31 प्रभात अजमेर, मंगलवार 30 अगस्त, 2022 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

दशकों से खानाबदोश बजाओ समुदाय के लोग मलेशिया, फिलीपीन्स और इण्डोनेशिया के समुद्र में रहते आए हैं, परंतु प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, अंधाधुंध फिशिंग और अन्य हानिकारक गतिविधियों के कारण इनकी जीवनशैली खतरे में आ गई है। इण्डोनेशिया में साउथईस्ट सुलावेसी प्रांत के पास वाकाटोबी द्वीप श्रृंखला में रहने वाले बजाओ समुदाय के अंदार हलीम ने कहा, ''बजाओ लोगों की आबादी बढ़ रही है पर दिन पर दिन संसाधन घट रहे हैं। महासागर के लिए अच्छे नियम कायदे नहीं बनाए गए तो मैं दावे से कह सकता हूं कि भविष्य में मेरा बेटा हलीम अपने दादा की तरह मछुआरा नहीं होगा।'' यू.एस के एक फिल्म निर्माता टेलर मैक्नल्टी ने बजाओ समुदाय पर 15 मिनट की डॉक्युमैंटरी फिल्म बनाई है जिसमें बताया है कि, किस प्रकार बजाओ लोगों का जीवन बदला है। बजाओ समुदाय के लोग पहले पारम्परिक लैंपा बोट्स में रहते थे, जिनमें वो एक से दूसरे फिशिंग एरिया आते-जाते थे, परंतु अब वो ''फ्लोटिंग हाउसेज़'' में रहते हैं। बांस तथा बेंत की दीवारों वाले ये घर, समुद्र तल में गाड़े गए लट्ठों पर टिके होते हैं। समुद्र पर रहने वाले अन्य समुदायों की तरह बजाओ समुदाय की पारम्परिक जीवनशैली महासागरों व इसके संसाधनों पर बढ़ते दबाव की वजह से खतरे में है। शोधकर्ता एलैक्स जॉन ने कहा कि, आज समुद्र से संबंधित कई परम्पराएं, खासकर मछली पकड़ने के तरीके और समुद्री संसाधनों के उपयोग के तरीकों का क्षरण हो रहा है क्योंकि मशीनों व टैक्नॉलजी का प्रयोग ज्यादा हो रहा है। उन्होंने कहा कि, इण्डोनेशिया के सैनीहे आइलैण्ड्स पर स्थानीय मछुआरे मछली पकड़ने के लिए पारम्परिक फिशिंग गिअर ''साके'' के बजाय नैट फिशिंग गिअर जैसे आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करने लगे हैं। उन्होंने कहा कि, सैनीहे द्वीप के लोगों की मछली पकड़ने की परम्पराएं खतरे में हैं खासकर माकालेही द्वीप की। एलैक्स जॉन ने अपनी किताब में माकालेही को फिशिंग परम्परा का अंतिम गढ़ करार दिया है। उन्होंने कहा कि, वर्ष 2010 के तूफान में पारम्परिक फिशिंग गिअर का आखिरी सैट नष्ट हो गया था, उसका दोबारा निर्माण नहीं हुआ। इसका एक कारण यह है कि, अच्छा बांस उपलब्ध नहीं है जो इसका प्रमुख रॉ मटीरियल है। समुद्र में रहने वाले समुदायों की आजीविका को जो भी खतरा हो पर इसका जवाब उन्हीं में निहित है। अंदार हलीम ने कहा, ''हम अनुकूलन कर सकते हैं। जरुरत पड़ी तो हम इन समस्याओं पर विजय पा सकते हैं। सैंकड़ों वर्षों से हमने यही किया है।''

''भेड़िया आया, भेड़िया आया'' की स्थिति नहीं रही, क्लाइमेट चेंज का तांडव साफ दिख रहा है पाकिस्तान व चीन में

बेइन्तहा बारिश ने पाकिस्तान की एक तिहाई भूमि को, स्थानीय बाशिन्दों के शब्दों में, समुद्र बना दिया है

- सरकार ने पाकिस्तान की नौसेना को काम पर लगाया है, क्योंकि डूबे हुए क्षेत्र में न तो सड़क मार्ग से और न ही हैलीकॉप्टर से पहुंचा जा सकता है। क्योंकि इन्फ्रास्ट्रक्चर काफी तहस-नहस हो गया है और कई पुल बह गये हैं।
- पाकिस्तान का ''मेजर इकोनॉमिक एसैट'' पशुधन काफी नष्ट हो गया है, क्योंकि लोग जान बचाने के लिए खेत-खलियान व मकान छोड़ कर भागे, किसी भी ऊंचे स्थान पर। स्वाभाविक ही है, पशुधन पीछे छूटा और डूब गया, खत्म हो गया।
- सबसे नज़दीक देश राहत पहुंचाने को तैयार हैं, पर लोगों के हाथ में राहत देने के लिये भारत के सहायता कर्मियों को पाकिस्तान के भीतरी इलाकों में जाना पड़ेगा और यह पाकिस्तान की सेना को मंजूर नहीं है। अतः सहायता कर्मी, पाकिस्तान के प्रशासन को राहत का सामान सौंप कर वापस आ रहे हैं, इस आशा से कि, सामान सही जगह, जरूरतमंदों के पास पहुंच जायेगा।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। प्रत्येक दिन के गुजरने के साथ ही यह स्पष्ट होता जा रहा है कि संभावित जलवायु परिवर्तन से हम पहले ही घिर चुके हैं।

पहले, चीन जबरदस्त गर्मी से त्रस्त था, जिससे वहां की ज़मीन में दरारें पड़ गईं और देश के अधिकांश हिस्सों में बिजली की भारी कमी आ गई।

और अब, पड़ोसी पाकिस्तान इसकी विपरीत स्थिति का सामना कर रहा है। मूसलाधार बारिश और मानसून ने देश के करीब एक तिहाई हिस्से को जलमग्न कर दिया है तथा स्थानीय लोग इसे महासमुद्र की संज्ञा दे रहे हैं। पाकिस्तान वैसे तो अल्प वर्षा वाले क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, लेकिन फिलहाल वह मानसून के अभूतपूर्व खौफ को झेल रहा है।

ज़मीनी स्थिति से मिलीं कुछ खबरें बताती हैं कि बारिश ने एक प्रमुख आर्थिक सम्पत्ति ''पशुधन'' को नष्ट कर दिया है। बाढ़ के कारण लोग बमुश्किल बचकर भाग सके तथा उन्हें अपने पशुधन को मरने के लिए छोड़ने पर विवश होना पड़ा। घर भी तबाह हो गए हैं और इनकी रिकवरी होना मुश्किल है।

बाढ़ के कारण देश की बड़ी नदियों से लगते विशाल इलाकों में हजारों लोग मारे गए हैं और 30 लाख से अधिक विस्थापित हुए हैं। आशंका है कि अब और लोग विस्थापित होंगे तथा बढ़ते जलस्तर से और मौतें हो सकती हैं।

पाकिस्तान सरकार ने अपनी नौ सेना को राहत कार्यों में लगाया है क्योंकि बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में सड़क मार्ग या हैलिकॉप्टर्स तक से पहुंचना मुनासिब नहीं हो पा रहा था। बाढ़ में फंसे लोगों को राहत सामग्री पहुंचाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

पाकिस्तान ने अब अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय से सहायता और पुनर्वास की अपील की है। बाढ़ के पानी ने अपने रास्ते में आयीं इन्फ्रास्ट्रक्चर सुविधाओं को भी तबाह कर दिया है। इन क्षेत्रों के कई पुल टूटकर बह गए। इसके कारण लोगों के पास संचार या सुरक्षित बचकर भागने का साधन नहीं रह गया।

सैटेलाइट डेटा से सिंधु नदी के पास जबरदस्त बाढ़ का पता चलता है, जिसने कृषि फार्मों और जुती हुई कृषि भूमि को जलमग्न कर दिया है। देश की खाद्य सुरक्षा पर इसका गंभीर प्रभाव पड़ेगा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तमिलनाडू में मंदिरों के मैनेजमैंट पर काबिज होने की लड़ाई सुप्रीम कोर्ट तक पहुंची

भाजपा मंदिरों के मैनेजमैंट पर सरकार के कब्जे के खिलाफ

- दूसरी ओर डी.एम.के. यह ही नहीं चाहती, बल्कि यह लागू करना चाहती है कि, गैर ब्राह्मण पुजारी नियुक्त हों।
- पर, क्या इस ब्राह्मण समर्थक, धार्मिक अभियान का लाभ मिलेगा भाजपा को तमिलनाडू में, क्योंकि जनसंख्या की दृष्टि से ब्राह्मणों की जनसंख्या नगण्य सी है तमिलनाडू में।

-लक्ष्मण वैंकेट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। तमिलनाडु तथा दक्षिण भारत में अन्य स्थानों पर भी मंदिरों के नियन्त्रण को लेकर लड़ाई और तेज हो गईहै। राज्य के मंदिरों पर अपने नियन्त्रण से सम्बन्धित तमिलनाडु सरकार के एक निर्णय के खिलाफ वरिष्ठ भाजपा नेता सुब्रमन्यम स्वामी सर्वोच्च न्यायालय पहुँच गये हैं। उन्होंने सरकार द्वारा की गईनियुक्ति पर ''स्टे'' भी माँगा है। ज्ञातव्य है कि सरकार ने 208 गैर-ब्राहमण व्यक्तियों को ''अर्चक'' (पुजारी) पद के नियुक्ति पत्र जारी कर दिये हैं।

सर्वोच्च न्यायालय ने नियुक्तियों अन्तरिम ''स्टे'' की माँग स्वीकार नहीं की हैं, किन्तु इस पर तथा मन्दिर पर सरकार के नियन्त्रण के सरकार के आदेश पर तमिलनाडु सरकार से जवाब माँगा है। लेकिन राजनैतिक पर्यवेक्षक ऐसा मान रहे हैं कि यह सब तमिलनाडु में धार्मिक तापमान को और अधिक बढ़ाने की शुद्ध राजनैतिक योजना है क्योंकि भाजपा वहाँ अपनी जड़ें जमाना चाहती हैं।

भाजपा ने, डेढ़ साल पहले, पूरे राज्य में एक धार्मिक यात्रा निकालने की योजना बनाई थी तथा उसके मित्र दल तथा राज्य में उस समय के सत्तारूढ़ दल ए.आई.ए.डी.एम.के. ने भी भाजपा को इसकी अनुमति नहीं दी थी। धार्मिक ध्रुवीकरण की कोशिशें तमिलनाडु में बहुत कारगर सिद्ध नहीं हुईं। तमिलनाडु ने धर्म और राजनीति को मिलाने से दूर रहने की सतर्कता बरती है, जबकि भाजपा ने अन्य स्थानों पर और राजनीति और धर्म को गड्डमड्ड करने का ही राजनैतिक लाभ लिया है।

लेकिन तमिलनाडु में भी, भाजपा ने अपना खाता खोलने की व्यवस्था बिठा ही ली तथा उसके 4 विधायक निर्वाचित हो ही गये, लेकिन उनकी जीत में भाजपा के गठबन्धन पार्टनर ए.आई.ए.डी.एम.के. का सहयोग था।

अभी हाल ही में, जब ए.आई.ए.डी.एम.के. अपने अंदरूनी झंझटों में उलझी हुई थी, भाजपा ने अपना जनाधार बढ़ाने तथा एक महत्वपूर्ण विपक्षी दल के रूप में उभरने के लिये आक्रामक तरीका अपनाया है। भाजपा के बेहद चर्चित तथा आक्रामक प्रदेश प्रमुख के. एन.अन्नामलाई फोकस एवं लाइम लाइट में रहने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देते।

चन्द माह पूर्व, जब भगवान नटराज का चिदम्बरम मन्दिर सुर्खियों में आया था क्योंकि मन्दिर के व्यवस्थापकों ने मंदिर के खातों तथा प्रक्रियाओं की सरकार द्वारा ऑडिट किये जाने की अनुमति नहीं दी थी तथा सरकारी ऑडिट को मन्दिर के संभावित सरकारी अधिग्रहण के कदम के रूप में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'ऑपरेशन उपलब्ध'

- रेल्वे पुलिस फोर्स ने ''ऑपरेशन उपलब्ध'' के तहत ऐसे अवैध सॉफ्टवेयर का भंड़ाफोड़ किया है, जिनमें दलाल बड़े पैमाने पर रेल्वे टिकटों की दलाली कर रहे थे। इस ऑपरेशन के तहत आधा दर्जन लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। ''ऑपरेशन उपलब्ध'' मिशन मोड़ के अन्तर्गत, रेलवे पुलिस फोर्स (आर.पी.एफ.) ने गहन एवं निरन्तर मुहिम चलाकर, पिछले दो माह में देश के विभिन्न भागों से आधा दर्जन दलाल गिरफ्तार किये हैं। आर.पी.एफ. ने रेलवे टिकटों के गैर कानूनी व्यवसाय के लिये

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या गुलाम नबी, कैप्टन अमरिन्दर सिंह की राह चलेंगे?

एक फर्क जरूर है, अमरिन्दर सिंह ने अपनी पार्टी बनाकर, भाजपा से गठबंधन किया और आज़ाद भाजपा से खुल्लम खुल्ला नहीं जुड़ेंगे

- भाजपा नये ''डीलिमिटेशन'' के बाद जम्मू में काफी सुखद स्थिति में है, अतः भाजपा को आज़ाद की जरूरत कश्मीर घाटी में है।
- घाटी में फारूख अब्दुल्ला की पार्टी के पक्ष में एकतरफा वोट नहीं पड़ें, इसमें आज़ाद की पार्टी भाजपा की मदद कर सकती है।
- अगर आज़ाद नैशनल कॉन्फ्रैंस के वोट काटने में सफल हुए तो, भाजपा एक आध छोटी पार्टी का समर्थन लेकर एक हिन्दू मुख्यमंत्री ला सकेगी कश्मीर में।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। कांग्रेस के पूर्व नेता गुलाम नबी आज़ाद स्वयं को पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह की भूमिका में पाते हैं। अमरिन्दर सिंह ने पिछले विधानसभा चुनावों से पूर्व अपनी क्षेत्रीय पार्टी शुरू करने के लिए कांग्रेस छोड़ी थी और भाजपा के साथ गठबंधन भी किया था।

तथापि, कैप्टन के विपरीत आज़ाद के भाजपा के साथ चुनाव पूर्व गठबंधन करने की उम्मीद नहीं है, लेकिन आकलन यह है कि आज़ाद एक नई पार्टी शुरू करने के निर्णय के साथ ही कश्मीर घाटी में नैशनल कॉन्फ्रैंस के वोट बैंक में सेंधमारी कर भाजपा का हित साधेंगे।

यद्यपि चुनाव तिथियों की घोषणा नहीं की गई है, लेकिन जम्मू और कश्मीर के चुनावों के अगले वर्ष के शुरूआत में होने की संभावना है। यहां परिसीमन और कश्मीर के मानचित्र का खाका पुनः खींचने के बाद होने वाले चुनावों में भाजपा और नैशनल कॉन्फ्रैंस को मुख्य प्रतिद्वंदियों के रूप में देखा जा रहा है। परिसीमन के बाद हिन्दू बाहुल्य जम्मू क्षेत्र की विधानसभा सीटें 37 से बढ़ाकर 43 कर दी गई हैं, जबकि कश्मीर घाटी की सीटें 46 से बढ़कर 47 हो गई हैं। इस स्थिति में भाजपा के रणनीतिकारों की राय में राज्य में किसी हिन्दू मुख्यमंत्री को आसीन करने का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राफेल डील

- राफेल विमान सौदे में बिचौलिए की भूमिका की जांच कराने संबंधी याचिका सुप्रीम कोर्ट ने अस्वीकार कर दी। यह याचिका दिल्ली के वकील मनोहर लाल शर्मा ने दायर की थी।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार दिल्ली के वकील मनोहर लाल शर्मा की उस याचिका को स्वीकार करने से मना कर दिया जिसमें मांग की गई थी राफेल विमान सौदे में बिचौलिए को डील कराने पर दसॉल्ट एविएशन द्वारा एक मिलियन यूरो दिए जाने की स्वतंत्र जांच हो। यह खबर फ्रैंच मीडिया रिपोर्ट पर आधारित थी।

चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया (सी.जे.आई.) उदय उमेश ललित एवं जस्टिस एस. रवीन्द्र भट की बैंच ने शर्मा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गुलाम नबी ने राहुल गांधी की धज्जियां उड़ाने का क्रम जारी रखा

उन्होंने एन.डी. टी.वी. को दिये इन्टरव्यू में कहा कि, उन्होंने अपनी राजनीति इंदिरा गांधी के चरणों में बैठकर सीखी है और वरिष्ठ राजनीतिज्ञों का आदर करना उनके खून में इस ट्रेनिंग की वजह से है

- क्या इस संदर्भ में राहुल गांधी की पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के खिलाफ शिकायत जायज है कि, वे उन्हें, राहुल को, काम नहीं करने दे रहे। यह बात उन्होंने सी.डब्ल्यु.सी. की धुआंधार बैठक में अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने से पहले कही थी।
- साथ ही, जहां तक वरिष्ठ नेताओं को सम्मान देने की बात है, क्या, यह सच नहीं है कि, संजय गांधी जब कांग्रेस के सर्वेसर्वा थे, तब उनका व्यवहार काफी आक्रामक था, बुजुर्ग व वरिष्ठ नेताओं के प्रति गुलान नबी उनके प्रबल पंक्ति व्यक्ति वाले समर्थक थे।
- ''जनरेशनल चेंज'' (पीढ़ी का बदलाव) हर पार्टी में हुआ है। भाजपा ने अडवानी, मुरली मनोहर जोशी, यशवंत सिन्हा को रिटायर कर दिया था, मोदी युग के आरंभ होने पर। लेकिन कांग्रेस में विशेषकर, वरिष्ठ नेता शालीनता से रिटायर नहीं हुए और इस्तीफा देने तक पार्टी की ओर से विपक्ष के नेता बने रहे राज्यसभा में।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। अपने नेता राहुल गांधी अपमानित करने के अपने प्रयासों को जारी रखते हुए, गुलाम नबी आज़ाद ने आज फिर जोर देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ 2019 में पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी द्वारा छेड़े गये ''चौकीदार चोर है'' नारे से कई पुराने पार्टी नेता असहज हो गये थे।

एन.डी.टी.वी. समाचार चैनल को दिये एक इन्टरव्यू में, आज़ाद जिन्होंने पाँच दशक से अधिक समय तक कांग्रेस में रहने तथा पार्टी एवं सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर रहने के बाद कांग्रेस छोड़ दी, ने भाजपा के केन्द्र की सत्ता में दोबारा आने तथा कांग्रेस के बुरी तरह पराजित होने के बाद हुई सी.डब्ल्यु.सी. की एक मीटिंग की याद दिलाई तथा इस मीटिंग में राहुल गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद छोड़ दिया था।

कांग्रेस की इस लम्बी चली उत्तेजक मीटिंग, जिसमें उन्होंने इस्तीफा दिया था, में राहुल गांधी ने कहा था कि पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के प्रतिरोध के कारण उनके लिये काम करना मुश्किल हो गया है। उन्होंने ''चौकीदार चोर है'' नारे का हवाला दिया था तथा कहा कि किसी ने इस नारे का समर्थन नहीं किया था। आज़ाद ने इस बात की पुष्टि भी की कि कांग्रेस में एक पीढ़ीगत अलगाव पैदा हो गया है।

यह पीढ़ीगत अलगाव एवं मनमुटाव आज सभी पार्टियों को कष्ट दे रहा है तथा सत्तारूढ़ भाजपा भी इससे अछूती नहीं रही है। भाजपा में एल.के. अडवाणी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी तथा यशवन्त सिन्हा जैसे वरिष्ठ नेता या पूरी तरह उपेक्षित कर दिये गये या फिर वे अलग-थलग कर दिये गये। वहीं आज़ाद पार्टी में बने रहे तथा राज्यसभा में विपक्ष के नेता पद पर भी बने रहे। लेकिन अब ऐसे समय, जब कांग्रेस स्वयं के पुनरुद्धार के लिए संघर्षरत है

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'गुलाम नबी को किसका डर है'

- कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता जयराम रमेश ने ट्वीट किया कि, गुलाम नबी को किसका डर है जो वे हर पल अपने विश्वासघात को सही ठहराने में लगे हैं।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता, जयराम रमेश ने सोमवार को ट्वीट किया कि, गुलाम नबी आज़ाद हर मिनट अपने विश्वासघात को उचित ठहरा रहे हैं, उन्हें किस बात का डर है।

जयराम ने कहा, ''बहुत आसानी से उन्हें बेनकाब किया जा सकता है, लेकिन हम अपना स्तर गिराना नहीं चाहते।''

उन्होंने आगे कहा, ''केवल कांग्रेस की बदौलत, इतने लंबे करियर के बाद,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)